



# पत्र-पुष्प



## “मास्टर स्नेह के सागर बन अपकारियों पर भी उपकार करो”

(याद पत्र – 22-06-2024)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सर्व के शुभचिंतक, सदा कल्याण की भावना रख, हर आत्मा पर उपकार करने वाले, शुभ भाव वा भावना से सम्पन्न, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - जून मास में अपनी मीठी जगदम्बा माँ के समान कर्मयोगी बन, मात-पिता की अलौकिक पालना के अनुभव में समाते हुए सभी ने बहुत अच्छी अनुभूतियां की होंगी! मीठी मम्मा के यह बोल सदा ही कानों में गूँजते कि हर घड़ी अन्तिम घड़ी है, हुक्मी हुक्म चला रहा है। मम्मा सदा आज्ञाकारी, वफादार बन बापदादा के दिलतख्तनशीन बनी। फिर हमारी दीदी मनमोहिनी जी ने उनके कदम पर कदम रख ईश्वरीय नियम और मर्यादाओं को दृढ़ता से पालन करते, कराते सर्व को शक्तिशाली बनाया। बापदादा के अव्यक्त होने के बाद दीदी-दादी की जोड़ी ने मिलकर जो एकता की मिसाल कायम की, सदा स्वमान में रहकर सभी को सम्मान देते हुए पूरे संगठन को एक किया और सबके सहयोग से पूरे विश्व में सेवाओं की धूम मचाई, वह तो हम सब अनुभव कर ही रहे हैं। अभी हम सभी ब्रह्मा वत्सों को भी उनकी दिव्य अलौकिक पालना का रिटर्न, अपनी एकरस अचल अडोल स्थिति बनानी है और स्थापना के रहे हुए कार्य को सम्पन्न करना है। इसके लिए बापदादा हम बच्चों को यही इशारा देते कि बच्चे, अभी अपने समय को, सुखों को, नाम, शान, मान और सर्व प्राप्ति की इच्छाओं को कुर्बान कर महादानी बनो। मन को सदा स्वच्छ रख अपकारी पर भी उपकार करो। कभी स्वयं के प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति मन में व्यर्थ संकल्प भी न आयें। अपमान को स्व-अभिमान में, अपकार को उपकार में परिवर्तित कर बाप समान सदा विजयी बनो। संकल्प में भी कभी गम के संस्कार इमर्ज न हों।

अब यही लक्ष्य रखना है कि जो भी आत्मा मेरे सम्पर्क में आये वह खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होकर जाए। किसी भी आत्मा से कुछ ले करके देने की इच्छा नहीं रखनी है। संकल्प में भी न आये कि यह करे तो मैं करूँ, यह बदले तो मैं बदलूँ,.... हमें तो अपने परोपकार की भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना है। वर्तमान समय इसी सेवा की आवश्यकता है। बोलो, मीठे मीठे भाई बहिनें सदा ऐसा ही लक्ष्य रख, सर्व के प्रति शुभ भावना, परोपकार की भावना रहती है ना!

बाकी मधुबन बेहद घर में सभी स्थानों पर सेवाओं के अनेकानेक कार्यक्रम चलते रहते हैं। अभी शान्तिवन के विशाल डायमण्ड हॉल में योग भट्टियां चल रही हैं। मानसरोवर, आनंद सरोवर में भी योग भट्टियां तथा योग शिविर के कार्यक्रम चल रहे हैं, ज्ञान सरोवर में हर विंग के सम्मेलन हो रहे हैं। नये पुराने सभी बाबा के बच्चे बहुत उमंग-उत्साह से आते, खूब रिक्रेश हो रहे हैं। यह जुलाई-अगस्त मास विशेष जब भारत में चारों ओर बरसात की सीज़न होती है, तो सभी सेवाकेन्द्रों पर भी योग तपस्या के ही कार्यक्रम चलते हैं, इससे वायुमण्डल सदा निर्विघ्न और शक्तिशाली रहता है।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद....

ईश्वरीय सेवा में,  
बी.के. रतनमोहिनी



## ये अव्यक्त इशारे



### परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारियों पर भी उपकार करो

1) जैसे बापदादा सदा बच्चों के साथ हर कदम में सहयोगी हैं और अन्त तक रहेंगे। बाप को किसी के प्रति घृणा नहीं होती। सदैव अपकारी के भी शुभ चिन्तक हैं, ऐसे फालो फादर करो। हर आत्मा के प्रति सदा शुभ भाव और शुभ भावना रखो, इसने ऐसा क्यों किया, यह सोचने के बजाए इस आत्मा का कल्याण कैसे हो - यह सोचो तब कहेंगे शुभचिन्तक, परोपकारी आत्मा।

2) कोई गाली दे, झूठा इल्जाम लगाये, लेकिन आपको क्रोध न आये। अपकारी के ऊपर उपकार करना - यही आप ब्राह्मणों का धर्म है। वह गाली दे आप गले लगाओ, यही है कमाल। इसको कहा जाता है परिवर्तन। गले लगाने वाले को गले लगाना - यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन निन्दा करने वाले को सच्चा मित्र मन से मानो, तब कहेंगे उपकार करने वाले।

3) कल्याणकारी भावना वा वृत्ति रखकर कोई भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा को अपनी पालना से उपकारी बना सकते हो। कैसी भी पतित आत्मा, पतित-पावन की वृत्ति से पावन हो सकती है। जैसे माँ बच्चे की कमजोरियों वा कमियों को नहीं देखती है, उनको ठीक करने का ही रहता है। तो यह पालना करने का कर्तव्य इस रूप में स्थित रहने से यथार्थ चल सकता है।

4) सन्तुष्ट को सन्तुष्ट रखना, स्नेही को स्नेह देना, सहयोगी के साथ सहयोगी बनना - यह महावीरता नहीं है, लेकिन कोई कितना भी असहयोगी बने, अपने सहयोग की शक्ति से असहयोगी को सहयोगी बनाना इसको महावीरता कहा जाता है। कमजोर को कमजोर समझ छोड़ न दो। लेकिन उसको बल देकर बलवान बनाओ, कमजोर को हाईजम्प देने योग्य बनाओ तब कहेंगे महावीर अथवा सब पर उपकार करने वाले।

5) जिसका आपके प्रति शुभ भाव है उसके प्रति आप भी शुभ भाव रखते हो, उपकारी पर उपकार करते हो, यह कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन कोई आपको बार-बार गिराने की कोशिश करे, आपके मन को डगमग करे, फिर भी आपको उसके प्रति सदा शुभचिन्तक का, अचल-अटल भाव हो, बात के कारण भाव न बदले, कोई अपकार करे, आप उस अपकार को उपकार में परिवर्तित कर दो तब कहेंगे कमाल।

6) ज्ञानी तू आत्मा सदैव हर एक के प्रति मास्टर स्नेह का सागर है। बिना स्नेह के उसके पास और कुछ है ही नहीं। कोई भी आयेगा तो उसे स्नेह ही देंगे। आजकल सम्पत्ति से भी ज्यादा स्नेह की आवश्यकता है। स्नेह की शक्ति से दुश्मन को भी मित्र बना सकते हो। अपकारियों पर भी उपकार कर सकते हो।

7) मन्सा सेवा करने के लिए सर्व के प्रति सदा ही श्रेष्ठ और निःस्वार्थ संकल्प हों, सदा पर-उपकार की भावना हो। अपकारी पर भी उपकार की श्रेष्ठ शक्ति हो। सदा दातापन की भावना हो। सदा स्व परिवर्तन, स्व के श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले हो।

8) कोई कैसी भी आत्मा सम्पर्क में आये - चाहे सतो गुणी, चाहे तमोगुणी सभी के प्रति शुभ चिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार करने वाले। कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि नहीं, क्योंकि जानते हैं कि यह अज्ञान के वशीभूत है अर्थात् बेसमझ बच्चा है। बेसमझ बच्चे के कोई भी कर्म पर घृणा नहीं होती है और ही बच्चे के ऊपर रहम वा स्नेह आयेगा।

9) कोई अपने संस्कार वा स्वभाव के कारण आपके सामने परीक्षा के रूप में आये लेकिन आप सेकेण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार से, एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल का संस्कार वा स्वभाव धारण कर लो - यही है उपकार करना।

10) कोई देहधारी दृष्टि से आपके सामने आये तो आप एक सेकेण्ड में उनकी दृष्टि को आत्मिक दृष्टि में परिवर्तित कर लो। कोई गिराने की वृत्ति से वा अपने संगदोष में लाने की दृष्टि से सामने आये तो आप उनको सदा श्रेष्ठ संग के आधार से, संगदोष से निकाल श्रेष्ठ संग लगाने वाला बना दो, यही है परोपकार की भावना।

11) जैसे बाप की महिमा में विशेष रहमदिल का गुण गाया जाता है। चाहे देश में, चाहे विदेश में बाप के आगे जायेंगे तो रहमदिल, मर्सीफुल कहेंगे। तो आप सभी भी मास्टर रहमदिल हो। ऐसे रहमदिल बन सब पर उपकार करो।

12) संगठन में दूसरे की गलती को अपनी गलती समझना, यह है संगठन को मजबूत करना। यह तब होगा जब एक-दूसरे में फेथ होगा। इसमें समाने की शक्ति भी जरूर चाहिए। देखा और सुना उसको बिल्कुल समा कर, वही आत्मिक दृष्टि और कल्याण की वा एक दूसरे के प्रति रहम की भावना रहे तब कहेंगे परोपकारी आत्मा।

13) अति पाप आत्मा, अति अपकारी आत्मा, बगुले के ऊपर भी नफरत नहीं, घृणा नहीं, निरादर नहीं लेकिन विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित हो रहमदिल बन तरस की भावना रखते हुए सेवा का सम्बन्ध समझकर सेवा करो, जितने होपलेस केस की सेवा करेंगे उतने ही प्राइज़ के अधिकारी बनेंगे और नामीग्रामी विश्व-कल्याणकारी गाये जायेंगे। पीसमेकर की प्राइज़ लेंगे।

14) योगी जीवन की ऊंची मंजिल को प्राप्त करने वाली आत्मा निंदा को स्तुति में, ग्लानि को गायन में, ठुकराने को सत्कार में, अपमान को स्व-अभिमान में, अपकार को उपकार में परिवर्तित कर बाप समान सदा विजयी, अष्ट रत्न और भक्तों की इष्ट बन जाती है।

15) अपने समय को, सुखों को, नाम, शान, मान सर्व प्राप्ति की इच्छा को कुर्बान कर, लेने की इच्छा को छोड़ देने वाले महादानी बनो तब कहेंगे परोपकार की भावना से सम्पन्न। अपकारी पर उपकार की वृत्ति वही रख सकते हैं जिनका मन स्वच्छ हो। यदि स्वयं के प्रति या अन्य के प्रति व्यर्थ संकल्प आता है तो यह स्वच्छ मन नहीं है। स्वच्छ मन, क्लीन और क्लीयर बुद्धि हो तब परोपकारी बन सकेंगे।

16) परोपकार की भावना रख हर आत्मा के गुणों को ही देखो। किसी की कमज़ोरी वा अवगुण को देखते भी अपनी शुभ भावना से, सहयोग की कामना से उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान करो, यही है परोपकार करना।

17) स्वयं के सर्व खजानों को अन्य आत्माओं प्रति दान देना - यही है परोपकार करना। ऐसे परोपकारी स्वयं को सर्व खजानों से सम्पन्न बेगमपुर का बादशाह अनुभव करेंगे। उनके संकल्प में भी गम के संस्कार इमर्ज नहीं हो सकते। इसके लिए वृत्ति से भी मैं-पन का त्याग हो, स्मृति में सदैव बाप और दादा रहे, मुख पर यही बोल हो तब विश्वपति बन विश्व की सर्विस कर सकेंगे।

18) विशेष रूप से अपनी मन्सा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करते रहना - यही है परोपकार करना। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न होकर जाए, ऐसे अखण्ड दानी बनो।

19) किसी भी आत्मा से कुछ लेकर के देने की इच्छा न हो, संकल्प में भी यह न आये कि यह करे तो मैं करूँ, यह बदले तो मैं बदलूँ, कुछ वह बदले कुछ मैं बदलूँ.... भिखारी को भी मालामाल बनाने वाला - अपकारी के ऊपर उपकार करने वाला ही परोपकार की भावना से सम्पन्न है।

20) परोपकारी आत्मा अपने उपकार की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह-उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान बना देगा अर्थात् भिखारी को बादशाह बना देगा। कोई कितना भी अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति सदा उपकारी रहे। इसके लिए ज्ञान में चलने के बाद जो स्व अभिमान आ जाता है, उसका भी त्याग। जब इतनी त्याग की वृत्ति और दृष्टि होगी तब स्मृति में बापदादा रहेगा और सबके प्रति उपकार की भावना बनी रहेगी।

21) परोपकारी आत्मा त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित रह हर आत्मा की कमज़ोरी को परखते हुए उसकी कमज़ोरी को स्वयं में धारण नहीं करेगी, वर्णन नहीं करेगी लेकिन

अन्य आत्माओं की कमज़ोरी का काँटा कल्याणकारी स्वरूप से समाप्त कर देगी। कांटे के बजाए - कांटे को भी फूल बना देना, यही है उपकार करना।

22) जो परोपकार की भावना से सम्पन्न है वह सदा सन्तुष्टमणी के समान स्वयं भी सन्तुष्ट होगा और सर्व को भी सन्तुष्ट करने वाला होगा। कमाल यह है जो होपलेस में होप पैदा कर देगा, जिसके प्रति सब निराशा दिखायें ऐसे व्यक्ति वा ऐसी स्थिति में सदा के लिए उनकी आशा के दीपक जगा देगा।

23) अगर कोई आपके सहयोगी भाई व बहन, परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

24) इस समय ऐसा परोपकारी ग्रुप चाहिए जो देने वाला दाता हो। जैसे सम्पन्न राजायें सदा प्रजा को देने वाले होते हैं। सम्पन्न राजाओं का हाथ कभी भी लेने वाला नहीं होगा, देने वाला होगा। आप बच्चे तो स्वर्ग के विश्व महाराजा बन दाता रूप का पार्ट बजाने वाले हो तो अभी से वही संस्कार स्वयं में भरो।

25) किसी से कोई सैलवेशन ले करके फिर सैलवेशन दें, ऐसा संकल्प में भी न हो - इसको कहा जाता है बेगर टू प्रिन्स। स्वयं लेने की इच्छा वाले नहीं। इस अल्पकाल की इच्छा से बेगर। अल्पकाल के साधनों को स्वीकार करने में बेगर - ऐसा बेगर ही सम्पन्न-मूर्त बन सर्व पर उपकार कर सकता है।

26) जो स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम् अविद्या है, अखण्ड दानी है, वही परोपकारी है। जैसे बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्मान बन बच्चों को मान दिया। पहले बच्चे - नाम बच्चे का काम अपना - काम के नाम की प्राप्ति का भी त्याग किया। नाम में भी परोपकारी बने। ऐसे फालो फादर करो।

27) ब्रह्मा बाप ने बच्चों को मालिक बनाया और स्वयं को सेवाधारी के रूप में रखा। मालिक-पन का मान भी दिया - शान भी दिया, नाम भी दिया। कभी अपना नाम नहीं

किया - मेरे बच्चे। तो जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, परोपकार किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा - बच्चों की विस्मृति कारण दुःख का अनुभव सो अपना दुःख समझा। ऐसे फालो फादर कर परोपकार की भावना से सम्पन्न बनो तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

28) अपकारी पर भी उपकार करना, यही ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है। जैसे बाप ने ग्लानि को भी कल्याणकारी दृष्टि से देखा। उपकारी पर उपकार तो दुनिया वाले भी करते हैं, भक्त आत्मायें भी करते हैं लेकिन ज्ञानी तू आत्मा का अर्थ है सर्व के प्रति कल्याण की भावना, अकल्याण संकल्प मात्र भी नहीं हो। अपकारियों पर भी उपकार करे तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी।

29) वर्तमान समय अनेक आत्माओं में स्व-उपकार करने की इच्छा है लेकिन हिम्मत और शक्ति नहीं है। ऐसी निर्बल आत्माओं का उपकार करने वाले आप पर-उपकारी बच्चे निमित्त हो। तो उपकार सच्चे दिल से होता है। विश्व राज्य अधिकारी बनना है तो स्व-उपकारी के साथ, पर-उपकारी बनो।

30) बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो - अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखो, संकल्प सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ हो, निःस्वार्थ हो, सदा दातापन की भावना हो। सदा स्व परिवर्तन अथवा स्व के श्रेष्ठ कर्मों द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले कर्म हों, तब कहेंगे परोपकारी।

31) हर आत्मा के प्रति रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। हर परिस्थिति में, हर कार्य में, हर सहयोगी संगठन में निःस्वार्थ पन हो, तब कहेंगे पर उपकार की भावना। जैसे ब्रह्मा बाप ने स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया। न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की, न रहने का स्थान स्वीकार किया। स्थूल और सूक्ष्म सदा "पहले बच्चे" - इसको कहते हैं पर-उपकारी। यही सम्पन्नता के सम्पूर्णता की निशानी है, इसमें फालो फादर कर समान बनो।

## (त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुवन

गुल्जार दादी जी के अनमोल वचन

**“बाबा को दिल में बिठाना है तो उसे बहुत स्वच्छ रखो, मन में कोई भी व्यर्थ व साधारण बातें ना हों”**

(10-07-09)

बाबा मुरली शुरू करते ही पहला शब्द कौन-सा बोलते हैं? ओम् शान्ति। हमारा आदि मन्त्र भी ओम् शान्ति है। यह ओम् शान्ति का महामन्त्र सभी समस्याओं का समाधान है। लेकिन हम उस अर्थ स्वरूप में स्थित नहीं होते हैं इसलिए हमारी अशान्ति अभी तक जाती नहीं है। जैसे बल्ब का स्वीच ऑन करते हैं तो अन्धकार चला जाता है, ऐसे ही अगर हम ओम् शान्ति शब्द के अर्थ में, उस स्वरूप में स्थित हो जायें तो जो भी समस्या है वह सहज समाप्त हो जायेगी क्योंकि आज की मूल समस्या है देहभान। देहभान ही भिन्न-भिन्न रूपों में समस्या को उत्पन्न करता है। कभी भी कोई समस्या आवे तो आप नोट करें कि इस समस्या का कारण किस प्रकार का देह-अभिमान है? देह की वृत्ति, देहभान के संस्कार हैं तो कर्मेन्द्रियां उसी प्रकार के कर्म की तरफ आकर्षित होंगी। अभी उस देह भान को हमें मिटाना है तो क्या करें? सभी की चाहना है, उमंग है, बाबा भी बार-बार होमवर्क के रूप में इशारा दे रहे हैं।

तो जो बाबा ने कहा है वो करना ही है। सोचना नहीं है, कहना नहीं है। संगठन में हाथ तो सब उठा देते हैं, पर मन का हाथ नहीं उठाते हैं। मन में दृढ़ संकल्प का हाथ उठाना, यह है सच्चा हिम्मत का हाथ उठाना। तो अभी हमको इस देहभान के फाउण्डेशन को खत्म करना है। सिर्फ मैं आत्मा हूँ, यह कहना और इस स्वरूप में स्थित होके कहना, इसका अभ्यास और अटेन्शन (चेकिंग) कम है इसलिए मैं-मैं शब्द का प्रयोग ज्यादा होता है। उसकी जगह बाबा बाबा शब्द यूज में आ जाये। शुरू में बाबा ने मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, यह कूट-कूटके पक्का कराया। पहले तो आत्मा का ही ज्ञान था, मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ। तो बाबा कहते थे चेक करो कि अभी मेरा मन कहाँ गया? क्या मैं आत्मा से बात कर रही हूँ या शरीर के भान में हूँ? हम लोगों ने इसका बहुत अभ्यास किया, चेकिंग करते थे। बात कर रही हूँ, तो किससे बात कर रही हूँ? सुन रही हूँ तो मैं कौन सुन रही हूँ? सुनाने वाले की दृष्टि और सुनने वाले की दृष्टि क्या है? मतलब आत्मा का ज्ञान बाबा ने बहुत पक्का कराया। अभी वह अभ्यास

कम है। कामकाज में ज्यादा रहते हैं और अभ्यास कम है। कामकाज करते भी हम आत्मा का पाठ पक्का कर सकते हैं क्योंकि बाबा ने हमको कहा है कि तुम कर्मयोगी हो। कर्मकर्ता नहीं हो। कर्म और योग दोनों का बैलेंस चाहिए। जो काम कर रहे हैं, उसी के संकल्प ज्यादा चलते रहते तो कर्मयोगी नहीं बन सकते।

जैसे बाबा करनकरावनहार है, वैसे यह शरीर करनहार है और आत्मा करावनहार है। तो करावनहार माना मालिक। हम कर्मयोगी हैं तो कर्म करते हुए भी बार-बार यह अभ्यास करें और चेक करते रहें, मैं आत्मा मालिक करावनहार बन कर्म करा रही हूँ। अगर मालिक होशियार नहीं है, अटेन्शन थोड़ा ढीला है इसलिए चेक करेंगे तो अभ्यास की तरफ ध्यान जायेगा। अगर हमारा मन किसी भी प्रकार से देहभान के वैरायटी रूपों में प्रभावित है, तो एक सेकण्ड में बिन्दी नहीं लगा सकेंगे क्योंकि उसके लिए कन्ट्रोलिंग और रूलिंग पॉवर चाहिए। संस्कार के वश हुए तो मन कन्ट्रोल में नहीं है ना। वृत्ति कहाँ चली जाती है, मन पर कन्ट्रोल नहीं है। तो बार-बार चेक करें कि सारे दिन में स्वराज्य अधिकारी रहे? कर्मेन्द्रियों के अधिकारी बनना है। जो बात हुई, अगर उसका ही संकल्प चलता रहता है, तो यह साधारणता है। हम विश्व से न्यारे हैं, स्वराज्य अधिकारी हैं, तो उस अधिकार के रूप से मन को चलायें, क्योंकि मन ही धोखा देता है। वृत्ति जाती है या कर्म-सम्बन्ध में फंसते हैं, जो भी गलतियाँ हमसे होती हैं, वह मन के संकल्पों द्वारा ही होती हैं। हम कर्मेन्द्रियों के राजा हैं तो मन के ऊपर भी हमारा राज्य होना चाहिए। मन मेरा मुख्य मंत्री है, मालिक नहीं है। हम आत्मा मालिक हैं तो मंत्री के ऊपर ऑर्डर होना चाहिए। मन में कई ऐसी बातें होती हैं, उसे मन से निकाला नहीं है तो वही बातें बार-बार होने से वो व्यर्थ का रूप बन जाता है।

बाबा कम्बाइण्ड है, यही माया डकू भुला करके अकेला कर देती है। फिर अन्दर ही अन्दर मन में बाबा को उलहना देते रहेंगे। बाबा कहते बच्चे, कम्बाइण्ड होकर रहो, फिर अधिकारी

होकर कहो कि बाबा आपको मदद करना है, तो बाबा मदद जरूर करेंगे। यदि बाबा टाइम पर हाज़िर नहीं होता तो जरूर इसका कारण है कि हम श्रीमत पर सदा जी हाज़िर नहीं होते हैं। अभी प्रैक्टिस करो बाबा और मैं, और कोई संकल्प न चले। जैसे यहाँ अभी मन में और कोई भी कारोबार आदि के संकल्प नहीं हैं, तो ट्रायल करो कि मैं फरिश्ते रूप आत्मा हो सकती हूँ? यहाँ चांस अच्छा है क्योंकि वायुमण्डल अच्छा है, कोई संस्कार नहीं, कोई विघ्न नहीं है इसलिए इसका अभ्यास और अनुभव बहुत अच्छा, जल्दी और ज्यादा से ज्यादा कर सकते हैं। आगे चलकर जिम्मेदारियाँ तो बढ़नी ही हैं क्योंकि विश्व का मालिक बनना है, विश्व को सम्भालना है तो बातें आयेंगी, लेकिन अभ्यास होगा तो आपको मदद बहुत मिलेगी। और बाबा ने कहा हुआ है कि कोई भी बात हो, उसी टाइम मेरे को दे दो। ऐसी कोई बात आ गई तो उसी समय मेरा बाबा कह दो, तो मैं हाज़िर हो जाऊंगा। आपको जो नहीं सहन हो सकता, नहीं सम्भाल सकते तो मेरे को दे दो तो हल्के हो जायेंगे। जो चीज़ किसी को दी जाती है, तो वो अपनी नहीं होती है। दूसरे की हो गयी। अगर हम उसको यूज़ करना चाहते हैं, तो अमानत में ख्यानत हो जाती है। एक बार दिल से बाबा को बात दे दी फिर भी कई बार वो बात आ जाती है, तो यह समझें कि पराई चीज़ को हम अपना क्यों मानें? उस समय आप छोटे बन जाओ।

मन खाली होगा तो सिर्फ बाबा याद आयेगा क्योंकि बाबा व्यर्थ के किचड़े में बैठ ही नहीं सकता, तो हम ऐसे ही नहीं समझें कि मेरे दिल में बाबा बैठा है या बाबा के दिल में हम हैं। बाबा दिल में समाया रहे उसके लिए स्वच्छता जरूर चाहिए। मन में और कोई संकल्प नहीं हो। सेवा का हो या स्व-उन्नति का हो, स्वउन्नति के स्वरूप में स्थित हो जायें। अगर स्वरूप में स्थित नहीं होते हैं तो भी वो मजा नहीं आता है। सिर्फ वर्णन होता है, जैसे वह मन्त्र होता है, वैसे बाबा मैं आपकी हूँ, आप तो मेरे हो, बाबा आप सुखदाता, शान्तिदाता हैं... परन्तु इससे ताकत नहीं मिलेगी। ऐसे ज्ञानी भक्त नहीं बनना है। पहले मन खाली रखो, कोई भी बात हो उसे बाबा को दिया यानि अपना दिल दे दिया। कोई भी बात का लिक जुटा हुआ होता है तो ऑटोमेटिकली वो याद आती रहेगी। तो बीच-बीच में 12-13 बारी समय निकाल बाबा का होमवर्क करने के आदती बन जायें।

बाबा को यूज़ करो, स्वराज्य अधिकारी की प्वाइन्ट स्वरूप को समय पर यूज़ करो। मुरली में प्वाइन्ट सुनते समय तो बहुत अच्छा लगता है लेकिन प्वाइन्ट बनने में दिक्कत होती है। अष्ट शक्तियों का तो सब वर्णन करते लेकिन समय पर काम में आती हैं? हम मन जीत बने हैं, मन पर पूरा अधिकार है तब शक्तियाँ

आर्डर मानेंगी। मूल बात है हम स्वराज्य अधिकारी के स्मृति स्वरूप में रहते हैं? बिन्दु लगाते क्वेश्चन मार्क या आश्चर्य की मात्रा तो नहीं लग रही है? तो यह हमारा पुरुषार्थ होना चाहिए। भृकुटी के बीच में आत्मा तख्त पर बैठी है, तख्त पर बैठने वाले का ऑर्डर मानना चाहिए ना। राजा हो और उसका माने कोई भी नहीं तो कौन मानेगा राजा है? तो केवल सुबह शाम नहीं, पर बीच-बीच में और जब बहुत बिजी हो उस समय चेकिंग करते रहो। उस समय हम अपनी कन्ट्रोलिंग पॉवर को देखें। और बातों में अटेन्शन देने के बजाए इसमें समय सफल करें तो बहुत अच्छा है। अगर हम मजबूत हैं तो हमें कोई हिला नहीं सकता है। अचल-अडोल। अभ्यास और चेकिंग, यह दो शब्द जरूर याद रखना। अपने को ऑर्डर पर चलाने की आदत होगी तो ऑटोमेटिकली आदत पड़ेगी। हम अपने को ऑर्डर में नहीं चला सकते हैं तो मेरे साथी कैसे ऑर्डर में चलेंगे? इसलिए हमको यह बहुत अटेन्शन देना पड़ेगा और सिर्फ चेकिंग से काम नहीं चलेगा, चेकिंग के साथ चेंज भी चाहिए, नहीं तो दिलशिकस्त होंगे।

बहुत बिजी थे, बहुत झगड़े हो गये, बहुत सेवा थी ना, इस तरह से अलबेलापन आ जाने से चेकिंग करना रह जाता है। लेकिन अभी तो झगड़े भी होंगे, सेवा भी होगी, यह होना ही है। अगर मैं सावधान रहूँगी, मन को साफ रखूँगी तो खुश रहेंगे। तो समस्या कभी नहीं कहो, पेपर भले कहो। बाबा से बड़ी बात कोई होती नहीं है। वो सर्वशक्तिवान बाबा हमारे साथ बैठा है, उसके आगे यह क्या है? बड़ी बात भी छोटी हो जाती। तो पेपर हमेशा आगे बढ़ाता, अगर पढ़ाई ठीक पढ़ रहे हैं तो पेपर में पास होंगे और आगे की क्लास में जायेंगे। अनुभव के आधार से बच जायेंगे, यह है अनुभव का क्लास आगे बढ़ना। तो अनुभव सबसे बड़ी अथॉरिटी होता है। आत्मा, परमात्मा और ड्रामा.... इन तीन बातों के अनुभवी मूर्त बनो। इन तीनों में से एक भी कम होगी तो गड़बड़ होगी, इन तीन चीज़ों का पाठ पक्का चाहिए और अनुभव करते जाना चाहिए, इस अथॉरिटी से कभी कोई भी प्रॉब्लम हो, बाबा की मदद से सहज हो सकता है। हमारी एक आशा है कि आप सब यहाँ कन्ट्रोलिंग पॉवर को प्रैक्टिकल में लाकर देखो और बातों में नहीं जाओ और बातें तो यहाँ करनी ही नहीं है। सभी बातों से किनारा करके अभ्यास करो, मैं आत्मा रूप में स्थित हो सकती हूँ? चलते हुए भी मैं आत्मिक रूप में स्थित हूँ? आत्मा करावनहार टांगों को चला रही है। मैं करावनहार आत्मा हूँ, यह कर्मेन्द्रियाँ करने वाली हैं। इसका अनुभव बार-बार करो। एक सेकण्ड में चेक चेंज, चेक चेंज, यह प्रैक्टिस करेंगे तो बाबा की याद स्वतः रहेगी। बाबा की याद से तो ताकत ही मिलती है ना, तो वो प्रैक्टिकल अनुभव होगा। अच्छा।

## दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“सच्चाई से भगवान को अपना बनाकर रखना, यही योगबल है, सच्चाई पर भगवान भी कुर्बान जाता है”

(14-08-06)

बाबा ने आकर घर का रास्ता बताया है, पहले पंख टूटे हुए थे, मनुष्य होते भी जैसे पशु समान। जो जैसे चलावे, वैसे चलें, परन्तु कर्म और भाग्य यह मनुष्य के हाथों में है। जो मनुष्य अपनी कर्मेन्द्रियों के वश था उसको बाबा उड़ता पंछी बनाता है। ऐसा शान्त और शीतल बनाता है जो वह मनुष्य से एंजिल बन जाए। एंजिल नाम लेते ही बुद्धि ऊपर चली जाती है। वह सबका रक्षक दिखाई पड़ता है।

हमारा संकल्प ऐसा हो जो अनेकों को संकल्प की शक्ति से सहयोग मिले। बाबा कहते परचिन्तन छोड़, तुम अच्छे चिन्तन से सोने जैसा बनकर दिखाओ। सोना माना सच्चा, उसकी सच्चाई पर भगवान भी कुर्बान जाता है। लोगों का भगवान पर विश्वास बैठता है। जो सच्चा नहीं होगा तो कितना भी ज्ञान सुनाये, पर उसके दिल को नहीं लगेगा। यह ज्ञान सत्य है और मेरे लिए है, यह नहीं निकलेगा। वो राय देगा औरों को सुनाओ, इसमें खुश नहीं होना, बहुत अच्छा सुना। सुने वो जो बिल्कुल सच्चा है, मुझे पता चला, झूठ क्या है, सच क्या है। दिन क्या है, रात क्या है। पाप क्या है, पुण्य क्या है। लोग खुद ही कहते हैं बुद्धि इतनी मलीन हो गयी है जो पाप और पुण्य क्या है, सोचने का समय ही नहीं है, कर लेते हैं। बाबा अभी समझने की बुद्धि देता है। मैं आत्मा पतित-पावन बाप के पास बैठी हूँ। बाबा पुजारी से पूज्य बना रहा है। हमारा यह यादगार सामने खड़ा है। वो देखकर लगता है, हम ही थे, अभी बन रहे हैं। एक सेकण्ड में बाबा कहता है, समझ आ जाती है, बच्चा स्वदर्शन चक्रधारी बन जाता है। उसकी बुद्धि में और कुछ याद नहीं आता है।

बाबा ने कहा है - श्रेष्ठ संकल्प वाला सहयोगी रहता है। संकल्प में श्रेष्ठता नहीं तो सहजयोगी नहीं तो सहयोगी कैसे बनेगा। श्रेष्ठ संकल्प से सहजयोगी, स्वतः योगी हैं। बाबा कहते मैं तुम्हारी कर्मेन्द्रियों को शीतल बनाता हूँ, जो संस्कार दृष्टि-वृत्ति को खराब करते हैं, उनको चेन्ज करना है। हमारा बाबा हमारी दृष्टि-वृत्ति को चेन्ज करने में बड़ी दिल से मेहनत कर रहा है। व्यर्थ, साधारण संकल्पों को चेक करो, उनकी गति क्या है? अगर संकल्पों की क्वालिटी श्रेष्ठ नहीं हुई, तो गैरन्ती बाबा नहीं देगा कि बेफिकर रहो।

पुरुषार्थ की प्रालम्ब्य हरेक की अलग है, पर मैंने अपने लिए क्या किया? वो सर्टीफिकेट बाबा से भी मिले, सदा ही सी फादर, फॉलो फादर। बाबा करावनहार है, फिर कर्म करके सिखाता भी है। मैं ये अनुभव से कहती हूँ, बाबा ने ऐसे मीठे-मीठे बोल सुनाये हैं जो बहुत यूज हुए हैं। सारी लाइफ इसी आधार पर जिन्दा रही हूँ। न किसी को ऊंचा देखती हूँ, न किसी को नीचा देखती हूँ, मेरा क्या जाता है, बाबा आया ही है सबका उद्धार करने के लिए, मुझे उद्धारमूर्त बनना है। मुझे यह लक्ष्य नहीं भूलना है। मुझे ऐसी मूर्ति बनना है जो देखते ही किसका उद्धार हो जाये। अधम का भी तो साधू का भी उद्धार हो जाये। ऐसा उद्धार रूप बनना है। तो एम हो कि मुझे क्या करने का है! संगमयुग पर बाबा कहते बहुत मेहनत नहीं है, यात्रा पर जा रहे हैं तो मंजिल सामने हो। जो मंजिल को सामने नहीं रखता है, उसको यात्री नहीं माना जाता। यात्रा पर जो रहता है वह नियम पर बहुत पक्का रहता है।

संगमयुग है, लंगर उठ गया है, कुछ काम यहाँ रहा ही नहीं। आत्मा में परमात्मा ने संस्कार भर दिये हैं, यह ज्ञान सुनते-सुनते किसका बेड़ा पार हो जायेगा। सच्चाई से भगवान को अपना बनाके रखना, यही तो योगबल है। फिर वो क्या करता है, क्या कराता है। आप सब चिन्तन से फ्री, शुभ श्रेष्ठ चिन्तन में रहो। बाबा जो कराता है, वह करते चलो, पूछने की जरूरत नहीं। कराने वाला करा रहा है, चलाने वाला चला रहा है। यह जब तक आँखें खोल कर नहीं देखेंगे तो फिर आँख है धुंधली, पंख हैं टूटे, कहाँ जाना है... , पता ही नहीं है। ऐसे पंछियों को देख तरस पड़ता है। न टाल पर बैठ सकता है, न उड़ सकता है। पंछी को क्या चाहिए? बस डाल पर बैठना है, डाली को पकड़ कर बैठेगा तो उड़ नहीं सकता। कहा जाता है पंछी और परदेसी किसी के मीत नहीं होते, किसी को मीत बना भी नहीं सकते हैं। एक-एक बात पर विचार करके देखो कि यह संकल्प मेरे को उड़ाने वाला है या कहीं रोकने वाला है? तो इस रावण के देश में हमारा काम नहीं है, निमित्त कहाँ जाना है, न किससे लेना, न देना। दाता ने जो दिया है वो भले मेरे से ले लो।

व्यर्थ संकल्प को खत्म करने के लिए बिजी रहो। संकल्प इतने श्रेष्ठ, वायुमण्डल को हल्का बनाने वाले हों। ऐसा मुस्कराता

हुआ चेहरा हो जो दर्द सारा खत्म हो जाए, पूरी मसाज़ हो जाये। सब दर्द को मिटाने की एक ही दवा है, श्रीमत् पर चलो। बड़े ते बड़ा सर्जन बाबा है। बाबा कहता है इतना भी अक्ल नहीं है, सर्जन के साथ खड़े होकर, काम करते-करते लोग सीख जाते हैं और आप इतना भी नहीं सीखते हो। बाबा की बात सुनते, बोलते

कहीं दर्द नहीं हो सकता। मुरली जो प्यार से सुनते सुनाते हैं, उनकी अन्त मते सो गति अच्छी होगी। आँखों में बाबा का दृश्य दिखाई दे, मीठी-मीठी बातें बाबा से करते रहें। अपना रक्षक और शिक्षक बाबा है, यह भूलना नहीं है। अच्छा।

## दादी प्रकाशमणि जी की अनमोल शिक्षायें “व्यर्थ से बचना है तो ईर्ष्या मुक्त बनो”

(1999)

1) ज्ञान में आने के बाद कई बार सूक्ष्म ईर्ष्या खुशी का अनुभव करने नहीं देती। ईर्ष्या वश कोई कुछ कहता है तो मन खराब होता है। फालतू बातें पैदा करने से उसके ऊपर असर पड़ता है। रामायण सारा ईर्ष्या पर है, मंथरा ने धूतीपना किया, ईर्ष्या की भावना से एक को आगे बढ़ाते, दूसरे को पीछे करते। माँ बच्चे की लड़ाई, सासू बहू की लड़ाई की जड़ है ईर्ष्या। अज्ञान में भी ईर्ष्या तो ज्ञान में भी ईर्ष्या।

2) ईर्ष्या के कारण कोई किसी को चढ़ा हुआ अथवा बढ़ता हुआ देख सहन नहीं कर सकता, न किसी को दुःखी देख उसे सहयोग देता। ज्ञान में भी यह सूक्ष्म भावना पैदा होती है, इसको इन्चार्ज बनाया इनको क्यों नहीं? इसकी खातिरी होती इसकी क्यों नहीं? यह बड़ा क्यों? यह सहन न होने के कारण एक दो के प्रति ईर्ष्या पैदा होती है। एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या पैदा होने का कारण अनुमान है। अनुमान के आधार पर हम किसी का दिल खराब करते हैं। इस अनुमान की बीमारी की कोई दवा नहीं है। भक्ति के चित्र भी अनुमान से मनगढ़न्त बने हैं। किसी से स्नेह होगा तो मनगढ़न्त बातें सुना-सुना कर उसे ऊंचा चढ़ायेगे, किसी से स्नेह नहीं तो उसे नीचे गिरायेगे। ईर्ष्या की शक्ति ऐसी है जो सहन न होने के कारण स्नेह, सहयोग सेवा आदि से वंचित हो जाते हैं।

3) जैसे काम क्रोध की माया है, वैसे ईर्ष्या की भी माया कम नहीं है, जितना-जितना ज्ञान की मंजिल पर चढ़ते उतना यह माया वार करती है, इसके वशीभूत होने वाला पद भ्रष्ट हो जाता है। ईर्ष्या का कारण - अपनी मस्ती में मस्त नहीं रहते। स्वयं पर फेथ नहीं है। अगर मैं अपने दृढ़ विश्वास पर अटल हूँ, दृढ़ हूँ तो मेरा कोई कुछ कर नहीं सकता। संस्कारों के टक्कर का कारण है - देह-अभिमान तथा अनुमान।

4) लौकिक का सहन करना सहज है, अलौकिक का सहन

करना कठिन है, ज्ञान की मंजिल को कहा है लम्बी खजूर, हमें इसे पास करना है। चढ़ाव-उतराव को क्रास करना है, मंजिल पर पहुँचना है तो हमें कोई गिरा नहीं सकता। जब एक इन्सान सब बातों को सामना करता, मंजिल पर पहुँचता है तो हम क्यों नहीं कर सकते? कोई हिलाता है तो तुम हिल जाते हो, अगर तुम अचल रहो तो वो फीका हो, थक कर हार कर बैठ जायेगा, इसमें चाहिए अपनी अडोलता। साथ-साथ स्वयं का चेकिंग मास्टर स्वयं बनो। चेकिंग मास्टर न होने कारण जिस प्यारी स्थिति के लिए बाबा कहता - अव्यक्त स्थिति में रहो, अपनी मस्ती में मस्त रहो, वह नहीं रहती। मस्त स्थिति न होने कारण अगर कोई कुछ कहता है तो व्यर्थ संकल्प चलते हैं। नाराज़गी आती है। कई बार मैं सोचती हूँ, खुदा मेरा बाबा है, मैं भी अपनी खुदा हूँ, हमें खुदा के समान अपनी स्थिति बनानी ही है। इसके लिए मेरे सामने सदा यही लक्ष्य रहता कि हमें सम्पूर्णता के समीप जाना है। बाबा कहते हैं तुम्हें कर्मातीत होना है। आखिर कब? कर्मभोग तो अन्त तक चलेगा। तो मुझे अपने को कर्मातीत बनाने के लिए क्या करना है? यह क्यों नहीं सोचते मैं कर्मातीत के नजदीक हूँ, जब कर्मबन्धन टूटना होगा तो टूटा और पंछी उड़ा। बाबा कहे बच्चे, तुम अपने को कर्मातीत स्थिति के समीप समझो, सेवा के पार्ट के निमित्त थोड़े समय के लिए यहाँ पार्ट बजाना है।

5) इन पुराने संस्कारों में रखा क्या है? इस पुरानी दुनिया में है क्या? बस मेरा बाबा और मैं। हमें सदा ऊपर रहना है। हमें बाबा अपने साथ नयनों पर बिठाकर ले जाने वाला है। क्या चाहते हो? क्या इच्छा है, किस बात में ममता है? हमें कुछ नहीं चाहिए। हम अपनी जीरो की स्टेज पर बैठ जाते हैं। मैं क्यों कहूँ कि मेरे में सहन करने की शक्ति नहीं है, मैं कमजोर हूँ। मेरी शक्ति का तो गायन है। जब मेरे नाम का गायन है तो मेरे में सहन की शक्ति क्यों नहीं। तो सहनशीलता की देवी, देवता बन जाओ। अच्छा।